ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

नारीवादी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सावित्रीबाई फुले का जीवन दर्शन

डॉ0 विपिन तेवतिया, शोधार्थी, अध्यापक शिक्षा विभाग, डी0ए0वी0 कॉलिज, मुजफ्फरनगर, उ0प्र0
डॉ0 कुलदीप कुमार, सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, एस0एस0वी0 (पी0जी0) कॉलेज हापुड़ (उत्तर प्रदेश)

सारांश

सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं पर लगाए गए भेदभावपूर्ण सीमाओं के खिलाफ दृढ़ता से बात की औपनिवेशिक भारत में प्रथम महिला स्कूल की प्रथम महिला शिक्षक के परिप्रेक्ष्य में उनका एक अग्रणी व्यक्तित्व हैं। भारत में सामाजिक मुक्ति के लिए, धर्मनिरपेक्ष शिक्षा पर उनका जोर उनके महत्वपूर्ण व्यक्तित्व का प्रतीक है। उन्होंने प्रभावी जाति व्यवस्था के खिलाफ अथक संघर्ष किया और हाशिए पर पड़े लोगों के उत्थान की दिशा में काम किया। मानवता, स्वतंत्रता,समानता और न्याय के सिद्धांत उनके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थे। एक ऐसे समय में जब महिलाएं केवल वस्तु थीं, उन्होंने एक चिंगारी को प्रज्वलित किया। उन्होंने सभी महिलाओं के लिए शिक्षा और सम्मान की मांग की, जिसके लिए उन्होंने अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ जीवन भर काम किया। यह कुछ ऐसा था, जो पहले असंभव था, जिसके कारण उनको समय–समय पर उत्पीड़न का सामनाभी करनापडा। इनके समृद्ध प्रयास से शिक्षा में समानता आई, सावित्रीबाई फुले के शिक्षा दर्शन को बेहतर तरीके से जानने एवं उनके संघर्षों और कठिनाइयों को समझकर, हम एक ऐसे जीवन की ओर देखते हैं। जिसने न केवल भारत में नारीवादी शिक्षा का चेहरा बदल दिया, बल्कि मानवता को उसके वास्तविक सार में प्रबुद्ध कर दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में नारीवादी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सावित्रीबाई फुले के जीवन दर्शन का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना :

सावित्रीबाई फुले औपनिवेशिक भारत की नारीवादी दार्शनिक थीं। उनके दर्शन की दृष्टि, तथाकथित भारतीय परंपरा से महिला को स्वतंत्रता देना है। वह एक साहसी महिला थी, जो अपने पति के साथ खड़ी रही और अपने पति का अनुसरण कियाऔर उनकी सभी क्रांतिकारी पहलों का समर्थन किया। वह अपने समय की प्रथम महिला शिक्षक एवं महिला शिक्षा की मां हैं। सावित्रीबाई और ज्योतिराव फुले पुणे में, एक दलित–मजदूर वर्ग के इलाके में रहते थे। ज्योतिराव ने अपनी पत्नी को घर पर ही पढ़ाया और शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षित किया। इस कार्य में ज्योतिराव के दोस्तों केशव शिवराम भावलकर और सखाराम यशवंत परांजपे ने उनकी सहायता की, सावित्रीबाई ने अहमदनगर और पुणे के सामान्य स्कूल में शिक्षक का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया था। सावित्रीबाई ने भारत की पहली महिला शिक्षिका और प्रधानाध्यापिका के रूप में ख्याति अर्जित की। सावित्रीबाई का शिक्षा जीवन कई कठिनाइयों से भरा रहा, इसके बावजूद उन्होंने शांति से शिक्षा का कार्य जारी रखा। उन पर भद्दी टिप्पणी की गई। कभी–कभी पथराव और गोबर या कीचड़ भी फेंकागया। जब वह स्कूल जाती तो, दो साड़ियाँ ले जातीं, स्कूल पहुँचने के बाद गंदी साड़ी को बदल देतीं, जो कि उनके वापस जाने पर फिर से गंदी हो जाती थीं, लेकिन फिर भी, उन्होंने हार नहीं मानी। इनका संघर्ष और कहानी भारत में आधुनिक भारतीय महिलाओं के सार्वजनिक जीवन की शुरुआत का प्रतीक है। बड़ौदा के राजा, सयाजीराव गायकवाड़ को लिखे एक पत्र में, राजनीतिक ऋषि और उनके शुभचिंतक परमानंद ने उस ऐतिहासिक कार्य, जिसमें दंपति लगे हुए थे, के बारे में लिखा, "ज्योतिराव से अधिक, उनकी पत्नी प्रशंसा की पात्र हैं। हम उसकी कितनी भी प्रशंसा करें, वह पर्याप्त नहीं होगा। कोई उसके कद का वर्णन कैसे कर सकता है? उसने अपने पति के साथ पूरी तरह से सहयोग किया और उसके साथ–साथ, उन सभी परीक्षणों और क्लेशों का सामना किया जो उनके रास्ते में आए थे। उच्च जातियों की उच्च शिक्षित महिलाओं में भी ऐसी त्यागी महिला मिलना मुश्किल है। मानवता, स्वतंत्रता, न्याय, समानता और शिक्षा में इनके द्वारा किये गए प्रयास सराहनीय हैं।

शोध का औचित्य :

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने नारीवादी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सावित्रीबाई फुले के जीवन दर्शन का अध्ययन किया है, यह शोध सावित्रीबाई फुले केजीवन दर्शनएवं नारीवादी शिक्षा की उपयोगिताको ज्ञात करकेशिक्षा को और अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक होगा एवं शिक्षार्थियों को नवीन विचारों को धारण करने के लिए प्रेरित करेगा।

प्रस्तुत शोध पत्र के उदेदश :

1. सावित्रीबाई फुले के नारीवादी शैक्षिक विचारों का विश्लेषनात्मक अध्ययन।
2.सावित्रीबाई फुले के महिला उत्थान के लिए किये गए संघर्ष काविश्लेषनात्मकअध्ययन।
3.सावित्रीबाई फुले के लेखन में किये गए बहुमूल्य योगदान का विश्लेषनात्मक अध्ययन।

4.सावित्रीबाई फुले के जीवन दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता।

शोध विधि :प्रस्तुत शोध विश्लेषनात्मक एवं वर्णात्मक विधि पर आधारित है इस शोध में पूर्णत्या द्वितीय आंकडों का प्रयोग किया गया है, इससे विभिन्न शोध पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों एवं पुस्तकों का सन्दर्भ लेते हुए वर्णात्मक व्याख्या एवं निषकर्ष निकाले गये हैं।

व्याख्या :प्रस्तुत शोध का विश्लेषनात्मक अध्ययन करने के उपरान्त शोधार्थी नेनारीवादी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सावित्रीबाई फुले के जीवन दर्शन की वर्णात्मक व्याख्या की है।

1. सावित्रीबाई फुले के नारीवादी शैक्षिक विचारों का विश्लेषनात्मक अध्ययन।

सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में महिलाओं के अधिकारों, और महिलाओं की शिक्षा में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल शुरू करते हुए महिलाओं की शिक्षा के लिए अभियान की शुरुआत की। सावित्रीबाई फुले को महाराष्ट्र में लड़कियों की पहली देशी शिक्षिका होने का श्रेय दिया जाता है। वह पहली आधुनिक, कट्टरपंथी, मराठी कवि भी हैं। महिला शिक्षा के लिए, कई लोग उन्हें जनानज्योति (शिक्षा की ज्वाला) और क्रांतिज्योति (क्रांति की ज्वाला) के नाम से पुकारते थे। सावित्रीबाई फुले ने माना कि शिक्षा केंद्रीय आश्रयों में से एक है जिसके माध्यम से महिलाएं और दलित वर्ग सशक्त बन सकते हैं और शेष समाज के साथ समान स्तर पर खड़े होने की उम्मीद कर सकते हैं। ज्योतिराव और सावित्रीबाई ने लड़कियों को व्यावसायिक और व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया, ताकि उन्हें स्वतंत्र विचार के योग्य बनाया जा सके। उनका मानना था कि औद्योगिक विभाग को स्कूलों से जोड़ा जाना चाहिए, जहां बच्चे उपयोगी व्यापार और शिल्प सीख सकें एवं अपना जीवनयापन आराम से करने में सक्षम हों। महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में फुले की भूमिका के कारण, उन्हें 'लैंगिक न्याय के धर्मयुद्ध' में से एक माना जाता है, जैसा कि इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज रिसर्च में प्रकाशित एक पेपर में कहा गया है। यह पेपर फुले को आधुनिक भारत में ख्याति प्राप्त महिलाओं के रूप श्रेय देता है, जो एक ऐसे समय में अपनी आवाज और संस्था विकसित करने में सक्षम थी, जब महिलाओं को दबा दिया गया था।सावित्रीबाई ऐसी शिक्षिका थीं, जो सभी महिलाओं और सभी वंचितों को शिक्षित करती थीं। वह लगातार ज्ञान के लिए शिक्षा, समृद्धि और शारीरिक श्रम के महत्व पर जोर देती थीं। उन्होंने महसूस किया कि महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए क्योंकि वे किसी भी तरह से पुरुषों से कमतर नहीं हैं और मनुष्यों की दास भी नहीं हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि शिक्षा ही व्यक्ति को जीवन में सही और गलत, सत्य और असत्य के बीच चयन करने की क्षमता का विकास करती है। उन्होंने ऐसे स्थान बनाने के लिए विशेष प्रयास किए जहां लड़के और लड़कियों की रचनात्मकता खिल सके। उन्होंने अपना जीवन शिक्षा और ज्ञान के प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने लड़कियों के लिए पुस्तकालय शुरू किया। उनकी सफलता इस बात से स्पष्ट होती है कि युवा लड़कियों को उनके मार्गदर्शन में पढ़ाई करना इतना पसंद था कि उनके माता–पिता लड़कियों के पढ़ाई के प्रति समर्पण की शिकायत करते थे। सावित्रीबाई फुले ने नैतिक शिक्षा का स्पष्टीकरण किया कि हम कहाँ हैं। नैतिक शिक्षा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सामाजिक शांति का संदेश देती है और सामाजिक समरसता का मार्ग भी प्रशस्त करती है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा में भावनात्मक मूल्य हैं, जैसे प्यार, देखभाल, साझा करना, बलिदान आदि इनके साथ–साथ संज्ञानात्मक मूल्य, को भी सूचीबद्ध किया है, जैसे मानवतावाद, स्वतंत्रता, समानता, भाईचारे और आधुनिक मूल्यों का लगातार प्रचार किया, जो समाज में शांति प्रदान करने में मदद करते हैं। समय बीतने के साथ, लोगों ने उन्हें स्वीकार करना शुरू कर दिया और इसलिए पति और पत्नी दोनों ही वर्ष 1848 में ही पाँच और स्कूल खोलने में सक्षम हो गए। सावित्रीबाई फुले की कड़ी मेहनत पर ध्यान देते हुए, ब्रिटिश सरकार ने उन्हें उनके शैक्षिक कार्यों के लिए सम्मानित किया। महिलाओं और समाज के लिए शिक्षा के महत्व को व्यक्त करती उनकी एक रचना–

"आत्मनिर्भर बनो, मेहनती बनो।
काम करो, ज्ञान और धन इकट्ठा करो,
ज्ञान के बिना सब खो जाता है।
हम ज्ञान के बिना पशु बन जाते हैं,
अब बेकार मत बैठो, जाओ, शिक्षा प्राप्त करो"।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

वह भारतीय महिलाओं और वंचित वर्ग को कष्टों का कारण समझाने की कोशिश करती है और यह कष्ट अज्ञान है। उन्होंने लगातार शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। ज्ञान और समृद्धि के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है, महिलाओं और वंचित वर्ग को इसे प्राप्त करना चाहिए।

2. सावित्रीबाई फुले के महिला उत्थान के लिए किये गए संघर्ष का विश्लेषनात्मक अध्ययन।

सावित्रीबाई ने न केवल एक शिक्षा सुधारक के रूप में काम किया बल्कि समाज सुधारक के रूप में भी काम किया, विशेष रूप से महिलाओं के लिए। वह भारत की महान दार्शनिक, सच्ची–साथी और समाज सुधारक थीं। 19वीं सदी में जाति व्यवस्था को लेकर भारत बहुत पिछड़ा हुआ था। अस्पृश्यता और सती प्रथा अभी भी चलन में थी, और निरक्षरता बहुत अधिक थी। महिलाओं और निचली जाति के समाज को शिक्षा से वंचित कर दिया गया था। उन्हें संपत्ति के रूप में माना जाता था। समाज में उन्हें अपनी राय व्यक्त करने की अनुमति नहीं थी। बाल विवाह एक आदर्श था, सावित्रीबाई फुले खुद बाल विवाह की शिकार थीं, क्योंकि उनका विवाह जब ज्योतिराव फुले से हुआ था, तब वह केवल 12 वर्ष की थीं। उन्होंने विधवा महिलाओं के उत्थान के संबंध में कार्य किया। उन दिनों, विधवाओं को समाज में अभिशाप माना जाता था, विधवा का सिर मुंडाया जाता था और उन्हें किसी भी ऐसे सौंदर्य प्रसाधन का उपयोग करने की अनुमति नहीं थी जो उन्हें सुंदर बना सकें। विधवाओं की ऐसी स्थिति ने सावित्रीबाई फुले और उनके पति को व्याकुल कर दिया। उन्होंने इसका विरोध किया और महिलाओं को जागरूक किया। इस पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता था। सावित्रीबाई फुले ने अपने जीवन को जन–समुदाय के लिए समर्पित किया, वह पुरुष प्रधान समाज के सांस्कृतिक स्वरूप से, महिलाओं की शिक्षा के लिए संघर्ष करती रहीं। उन्होंने महिलाओं की मुक्ति, अस्पृश्यता को दूर करने और विधवा पुनर्विवाह जैसे प्रमुख सामाजिक मुद्दों से निपटने की दिशा में काम किया। सावित्रीबाई फुले फर्स्ट मेमोरियल लेक्चर के लिए लिखे गए अपने निबंध में हरि नारके ने लिखा है, ष्भारत के सामाजिक और शैक्षिक इतिहास में, महात्मा जोतिराव फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले एक असाधारण जोड़े के रूप में खड़े हैं। वे पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता और सामाजिक न्याय के लिए एक आंदोलन बनाने के लिए एक भावुक संघर्ष में लगे हुए थे। " फुले ने 1854–55 के बीच भारत में साक्षरता मिशन भी शुरू किया। फुले ने सत्यशोधक समाज की शुरुआत की, जिसके माध्यम से वे सत्यशोधक विवाह की प्रथा शुरू करना चाहते थे, जिसमें कोई दहेज नहीं लिया जाता था I वह भारत में महिला मुक्ति आंदोलन की नींव रखने में सफल रहीं। उनका लक्ष्य स्वतंत्रता, भारतीय परंपरा, धार्मिक प्रथाओं और कर्मकांडों से मुक्ति था, हालाँकि, सावित्रीबाई फुले को जो प्रतिक्रिया मिली, वह उतनी उत्थानकारी नहीं थी, लेकिन वह जो कर रही थीं, उसमें दृढ़ निश्चय था।

समाज में महिला सशक्तिकरण के लिए उनको सामाजिक दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने इन सब बातों को नजरअंदाज कर दिया। इतना कष्ट सहने के बाद जब उनका मन उदास होता तो उनके पति उनका उत्साह बढ़ाते और उनका पूरा समर्थन करते। ज्योतिबा फुले ने सदैव अपनी पत्नी को अपना काम जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन फिर भी, पति और पत्नी दोनों को समाज के रूढ़िवादी तत्वों के घोर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता के लिए और जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई के लिए एक भावुक संघर्ष में लगी हुई थी। सावित्रीबाई, जिन्होंने सदियों से अपने समय से आगे अपने पति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चुना। उन्होंने भारत के इतिहास में अपने जीवन में एक बहुत ही क्रांतिकारी रुख अपनाया। वह भारतीय परंपरा की अपने तरीके से व्याख्या करने वालों के खिलाफ लडीं। सावित्रीबाई फुले ने गर्भवती बलात्कार पीड़ितों के लिए श्शिशु हत्या निषेध गृहश देखभाल केंद्र खोला और उन्हें अपने बच्चों को जन्म देने में मदद की। उन्होंने महिलाओं के लिए ष्डिलीवरी होमष के बारे में सड़कों पर बोर्ड लगाए, जिन्हें गर्भावस्था के लिए मजबूर किया गया था। डिलीवरी होम को "बालहत्या प्रतिबंधक गृह" कहा जाता था। सावित्रीबाई फुले ने भारतीय समाज में जाति–आधारित और लिंग–आधारित भेदभाव को खत्म करने की दिशा में काम किया। सावित्रीबाई फुले ने समाज के किसी भी वर्ग के लिए सभी प्रकार की सामाजिक असमानताओं के खिलाफ लड़ाई लड़ी। चूंकि अछूतों को उच्च जाति के लिए बने कुओं से पानी निकालने की अनुमति नहीं थी। इसलिए, सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले ने अपने घर के आसपास अछूतों के लिए पानी का अपना जलाशय शुरू किया। उनकी अपनी कोई संतान नहीं थी, लेकिन उन्होंने एक ब्राह्मण विधवा के बच्चे को गोद लिया, उसे शिक्षित किया और उसके लिए अंतर्जातीय विवाह की व्यवस्था की। सावित्रीबाई फुले ने अपने बेटे, यशवंतराव गुप्ता के पूर्ण समर्थन के साथ, नालासोपारा के आसपास के क्षेत्र में प्लेग की महामारी से

प्रभावित लोगों के इलाज के लिए एक क्लिनिक खोला। रिकॉर्ड के अनुसार, वह महामारी के समय में हर दिन दो हजार बच्चों को खाना खिलाती थी।

3.सावित्रीबाई फुले के लेखन में किये गए बहुमूल्य योगदान का विश्लेषनात्मक अध्ययन।

सावित्रीबाई फुले की कविताएं और अन्य लेखन कई लोगों के लिए प्रेरणा बनी हुई हैं। वे विद्रोही महिला कवयित्री और लेखिका थीं और भारत की जाति व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष में अग्रणी बनी रहीं । उन्होंने कुछ बहुत ही मूल्यवान लेखन को एक साथ रखा है।

काव्याफुले– कविताओं का संग्रह, 1854 :– यह उनकी कविताओं का पहला संग्रह और उस समय का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। इसकी भाषा सरल और प्रभावी है। यह लेखन का पारंपरिक रूप है, जिसे लोक रूप कहा जाता है। यह तब प्रकाशित हुआ था, जब वे महज 23 वर्ष की थीं। इसका अर्थ है कि 19–20 वर्ष की उम्र से ही उन्होंने कविताएं लिखनी शुरू कर दी थीं। इसमें प्रकृति, सामाजिक मुद्दों, शिक्षाप्रद कविताओं और ऐतिहासिक कविताओं जैसे विषयों पर कुल 41 कविताएँ हैं। सावित्रीबाई फुले अपनी रचनाओं में एक ऐसे समाज और जीवन का सपना देखती हैं, जिसमें स्त्री–पुरुष समानता हो, हर इंसान मानवीय गरिमा के साथ जीवन व्यतीत करे, किसी तरह का कोई अन्याय न हो, बेहतर समाज और सबके लिए खूबसूरत ज़िंदगी के मार्ग में उन्हें सबसे बड़ी बाधा जाति व्यवस्था और इसके द्वारा रची गई, स्त्री–पुरुष के बीच भेद–भाव को माना था। उन्होंने अपनी कविताओं में सबसे ज़्यादा चोट मनुवाद, जाति–पाति के भेद और स्त्री–पुरुष के बीच की असमानता पर किया है। जबकि उनकी कुछ कविताएँ मूल रूप से प्रकृति की कविताएँ हैं, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्हें आधुनिक मराठी का अग्रदूत माना जाता है।

ज्योतिराव के भाषण :–सावित्रीबाई द्वारा संपादित एक खंड है। यह पुस्तक 1856 में प्रकाशित हुई, इसमें ज्योतिराव के चार भाषण हैं। इसका प्रतिलेखन चार्ल्स जोशी द्वारा किया गया है। वह अपने भाषणों में शिक्षा प्राप्त करने, बुराइयों के खिलाफ लड़ने जैसे सामाजिक मुद्दों को संबोधित करते हैं।

सावित्रीबाई के पत्र ज्योतिराव :–उन दिनों बहुत ही कम व्यक्ति पत्र लिखते थे, अपने जीवनसाथी को तो छोड़ ही दीजिए। उन्होंने इसमें सामाजिक मुद्दों पर चर्चा पत्र में की। ज्योतिराव का पत्राचार भी उल्लेखनीय है क्योंकि वे हमें जीवन में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं । ये पत्र उनकी बड़ी चिंताओं को दर्शाते हैं, उनका ध्यान समाज के सबसे वंचित वर्गों की मुक्ति, समाज में पूर्ण मानव गरिमा और स्वतंत्रता को अर्जित करने से है।

मातोश्री सावित्रीबाई के भाषण :– इनको वत्सल प्रेस, बड़ौदा द्वारा प्रकाशित किया गया था।इनमे शिक्षा प्रदान करना, अच्छा आचरण, व्यसन ऋण आदि शामिल हैं।

बावनकाशी सुबोध रत्नाकर :–उनका दूसरा कविता संग्रह है जो भारत के इतिहास को बयान करता है, जिसमें गद्य में ज्योतिराव का काम भी शामिल है। इसमें 52 रचनाएँ हैं। इस कविता की रचना 1891 में ज्योतिराव की मृत्यु के बाद हुई और 1892 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई।

कविता अभिव्यक्ति का एक तरीका है; यह भावनात्मक मूल्य हैं, लेकिन संज्ञानात्मक मूल्य भी हैं क्योंकि सावित्रीबाई फुले की कविताएं दोनों प्रकार की अभिव्यक्ति करती हैं। सावित्रीबाई के साहित्य ने भारतीय नारी के दर्द, महत्वाकांक्षा और भावना को व्यक्त किया। जबकि उनके समकालीन रचनाकार महिलाओं के पौराणिक पतिव्रत की छवियों को फिर से बनाने में व्यस्त थे। जैसे सीता–सावित्री मॉड्यूल, इसके विपरीत, उन्होंने एक जुनून व्यक्त किया। वह आधुनिक भारतीय साहित्य में, ऐसे समय में अपनी आवाज को बुलंद करने में सक्षम थी, जब महिलाओं की आवाज को सभी वर्गों में बेरहमी से दबा दिया जाता था। इस प्रयास में उनके पति और गुरु ज्योतिबा फुले द्वारा इनको सदैव प्रोत्साहित किया गया। वह अपने जीवनकाल में भारतीय महिला के लिए एक अनुकरणीय व्यक्तित्व थी । उनका लेखन एक स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। उनका काव्य और साहित्यिक गुण जोश उत्पन्न करता हैं। जो 21वीं सदी में आज भी प्रासंगिक हैं।

4. सावित्रीबाई फुले के जीवन दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता।

सावित्रीबाई फुले इतिहास के महानतम भारतीयों में से एक हैं, वह व्यक्तिगत विकास के बारे में बात करती हैं, मानव अधिकारों, विकास, गुण और आत्मनिर्भरता पर जोर देती हैं और व्यावहारिक दर्शन का परिचय देती हैं। इन्होंने महिलाओं के उत्पीड़न की समस्या को उठाया और पुरुषों के वर्चस्व पर उनके विचार नारीवादी दार्शनिक के रूप में प्रसिद्ध हैं। नारीवाद के उनके दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता ने सावित्रीबाई फुले को औपनिवेशिक भारत में पहली नारीवादी दार्शनिक और शिक्षक के रूप में पेश किया जो महिलाओं की शिक्षा और एक मानवीय, समानता पर आधारित समाज के बीच संबंधों पर चर्चा करता

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

है। सावित्रीबाई का कट्टरपंथी दर्शन उनके कविता संग्रह ष्काव्या फुलेष् के विशेष संदर्भ में है। यह तर्क देता है कि उसका दृष्टिकोण और उसका साहित्य अभी भी एक ऐसी दुनिया में प्रासंगिक है जहां शिक्षा बड़े स्तर पर जाति और वर्ग की बाधाओं के पार बालिकाओं तक नहीं पहुंची है। यह नैतिक मूल्यों, शिक्षा और महिलाओं के जीवन के बीच संबंधों की जांच से शुरू होता है। यह आगे बढ़ता है। इस संदर्भ में सावित्रीबाई के दार्शनिक तर्कों का अन्वेषण करने से यह कहकर निष्कर्ष निकलता है कि वह समाज में महिलाओं को अनिवार्य शिक्षा देने के पक्ष में थीं। फुले ने महिलाओं को दमनकारी, जाति–आधारित और कठोर पदानुक्रमित सामाजिक व्यवस्था के शिकार के रूप में देखा तो महिलाओं के लिए संघर्ष किया, उनका मानना था कि सामाजिक–सांस्कृतिक ताकतें कृत्रिम रूप से लिंग संबंधों का निर्माण करती हैं, खासकर परंपरा, फुले ने परंपरा पर तीखा प्रहार किया जिसने महिलाओं को वास्तविक अधिकारों से वंचित कर दिया। जैसा कि सिमोन डी बेवॉयर ने कहा, ष्महिलाएं बनाई जाती हैं, वे पैदा नहीं होती हैंष् फुले ने यह भी सवाल उठाया, ”परंपरा ने महिला का अपमान क्यों किया? प्राचीन भारत में नारी की स्थिति ऐसी नहीं थीं, हर कोई बहुत खुश था। आमतौर पर महिलाओं को इस रूप में देखा जाता है। नारीवादी दार्शनिक सावित्रीबाई फुले भारत में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के अग्रदूत थे। सावित्रीबाई ने फुले की दृष्टि और जीवन शैली को आत्मसात किया, और वह उनके काम की निरंतर भक्त थीं। फुले के दर्शन में समानता और मानवता का स्थान सबसे महत्वपूर्ण था। सावित्रीबाई पर ज्योतिबा के विचार का प्रभाव काफी स्पष्ट है, उसने कहा है कि–

”ज्ञान को अपना ईश्वर होने दो, हर तरह से उसका पीछा करो,
संकल्प के साथ सफलता प्राप्त करें, मन को भटकने न दें,
ज्ञान कितना कीमती है; यह सभी का सबसे बड़ा उपहार है,
जिसके पास ज्ञान का भण्डार है, उसे लोग बुद्धिमान कहते हैं”।

फुले के दर्शन में समानता और मानवता का स्थान सबसे महत्वपूर्ण था। इसे विकसित करने के लिए वह शिक्षा के माध्यम में समानता और स्वतंत्रता चाहती हैं। महिलाओं के लिए शिक्षा जरूरी है यह उसके लिए एक उपकरण है अज्ञान से मुक्ति प्राप्त करने का, जो सभी दुखों का कारण है। उनका अनुभव है कि शिक्षा की कमी के कारण महिलाओं को आत्मनिर्भरता नहीं मिली है। और समाज में किए गए विकास को शिक्षा की सीमा से आंका जाता है। ज्योतिबा का दर्शन भारतीय और पश्चिमी विचारों का संश्लेषण है। ज्योतिबा के दर्शन में मानवतावाद प्रमुख कारक है। उनका दर्शन दोहराव नहीं बल्कि आलोचनात्मक, प्रगतिशील,क्रांतिकारी और रचनात्मक है। उनकी राय में महिला शिक्षित का अर्थ है संपूर्ण परिवार की शिक्षा, क्योंकि महिला पूरे परिवार का पालन–पोषण करती है। महिलाओं की मानसिक अज्ञानता के कारण समाज में समस्याएं पैदा होती है। फुले के अनुसार अज्ञान का अर्थ है अंधकार और शिक्षा का अर्थ है सूर्य–प्रकाश। उन्होंने महसूस किया कि सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा प्रभावी है। ज्योतिबा ने कहा, ”ज्ञान के बिना, बुद्धि खो गई, बुद्धि के बिना नैतिकता खो गई और नैतिकता के बिना सारी गतिशीलता खो गई! गतिशीलता के बिना पैसा खो गया और पैसे के बिना शूद्र डूब गए”। यह सब दुख ज्ञान की कमी के कारण हुआ। भारतीय सामाजिक क्रांति की जनक फुले के विचारों और कार्यों के केंद्र में महिलाएं हमेशा थीं। उनके सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर दार्शनिक सोच आधुनिकता से प्रभावित थी। सावित्रीबाई ने ज्योतिराव को जीवन भर जो समर्थन, सहयोग और साथ दिया, वह असाधारण है। पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता और शांतिपूर्ण साहचर्य का आदर्श जो उन्होंने निर्धारित किया है, वह समय और स्थान की सीमाओं से परे है। शिक्षा, सामाजिक न्याय, जाति उन्मूलन और पुरोहित सत्ता के उन्मूलन के क्षेत्र में उन्होंने जो पथप्रदर्शक कार्य किए, वे न केवल अतीत को बल्कि वर्तमान को भी रोशन करते हैं। यह वर्तमान समय में भी समानता के बिना एक योगदान है। सावित्रीबाई की यह विरासत हमारे जीवन को हमेशा समृद्ध करती रहेगी।

उपसंहार :

सावित्रीबाई ने महात्मा ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर महिलाओं, किसानों, दलितों और पिछड़ी जातियों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। उन दोनों ने प्रतिक्रियावादी और जातिवादी वर्चस्व वाली ताकतों द्वारा उन पर की गई गालियों का बहादुरी से सामना किया। और दुर्व्यवहार के बावजूद लैंगिक समानता और जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई के लिए अपना संघर्ष जारी रखा। सावित्रीबाई ने अपने अंतिम क्षणों तक जाति व्यवस्था और अन्य सामाजिक बुराइयों के अधिनायकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी। वह लैंगिक समानता के लिए एक मजबूत आवाज थीं। उनकी शक्ति और जोश के कारण ही जब समाज के कुछ वर्गों के लोगों को अछूत के रूप में देखा जाता था, तो उन्होंने उन्हें अपने घर में आश्रय दिया और उनकी

देखभाल की। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती दी, महिलाओं और हाशिए के लोगों के अधिकारों के लिए अपने स्थायी और वीर संघर्ष के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों के प्रभुत्व को तोड़ दिया। फुले ने शिक्षा को स्वाभिमान और आत्म निर्भरता के आंदोलन के साधन के रूप में देखा, और महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन के वाहन के रूप में शिक्षा के बारे में जागरूक किया है। उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के रास्ते पर समाज का नेतृत्व करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। फुले महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक शांति की प्रक्रिया में विश्वास करते थे। उनकी पहलों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है। सामाजिक–आर्थिक और न्याय के माध्यम से आज भारत की शिक्षा नीतियों में सकारात्मक बदलाव देखे जा सकते हैं। उनका दर्शन मानव केंद्रित है और नैतिक दर्शन की उनकी दृष्टि मानवतावाद है। तो हम देख सकते हैं कि सावित्रीबाई नैतिकता के पश्चिमी विचारों से भी प्रभावित थीं।

संदर्भग्रन्थः

- बख्शी, एस. आर. एवं लिपिए महाजन (2000). भारतीय के विश्वकोश इतिहास में ज्योतिराव फूले।
- देशपांडे, जी. पी. (एड.) (2002). ज्योतिबा फुले के चयनित लेखन, नई दिल्लीः मनोहर पब्लिशर्स एंड
- वितरक।
- गुप्ता, एन. एल. (2002). महात्मा ज्योतिबा फुलेः एक शैक्षिक दार्शनिक, नई दिल्लीः अनमोलप्रकाशन।
- जोशी, टी.एल. (1996). ज्योतिराव फुले, नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया।
- कीर, धनंजय (1997). महात्मा ज्योति राव फुलेः भारतीय समाज के जनकक्रांति, बॉम्बेः लोकप्रिय प्रकाशन।
- मणि, ब्रज. मणि (2005). इतिहास का देवब्राह्मणीकरणः भारतीय में प्रभुत्व और प्रतिरोध समाज,नई दिल्लीः मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
- ओमवेट, गेल (1977). महात्मा ज्योतिराव फुले और सामाजिक क्रांति की विचारधारा, इंडियाः इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 6(37), सितंबर।
- मणि, बी. आर.एवंसरदार, पी.(2008). ए फॉरगॉटन लिबरेटर, सावित्रीबाई का जीवन और संघर्ष
- फुले, नई दिल्लीः माउंटेन पीक।
- धरा, ललिता. (2011).फुले एंड वूमन्स क्वेश्चन, डॉ. अंबेडकर कॉलेज ऑफवाणिज्य और अर्थशास्त्र, मुंबई।
- मलिक, गौरे, एवं अर्चना, (2013). ज्योतिबा फुलेः एक आधुनिक भारतीय दार्शनिक, नई दिल्लीः सूर्योदय प्रकाशन।
- माली, एम. जी. (2006). सावित्रीबाई फुले–समग्र वनगमाया, मुंबईः महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृति मंडल।
- फड़के, वाई.डी. (1991). महात्मा फुले समग्र वांगमाया, मुंबईः महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल।
- ओमवेदित, गेल. (2002). ज्योतिबा फुले अनी स्त्री मुक्ति विचार, लोकवंगमय समूह,मुंबई।
- राव, अनुपमा (2003).जेंडर एंड कास्ट, सीरीज इश्यूज इन कंटेम्परेरी फेमिनिज्म,नई दिल्ली।